https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 05, PP 159-166 (Total PP 08)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

Contribution of Saharanpur Wood Art to Indian Art Heritage(भारतीय कला विरासत में सहारनपुर काष्ठ कला का योगदान)

Shamsher Warsi[a]*, Dr. Rajkumar Pandey[b]

[a] *Research Scholar - Dev Bhoomi Uttarakhand University, Dehradun, Uttarakhand*
[b] *Assistant Professor - Dev Bhoomi Uttarakhand University, Dehradun, Uttarakhand*
[a]*Email: shamsher.warsi24@gmail.com*

Abstract

Handicrafts have held a significant place in Indian art tradition, reflecting the country's cultural diversity, craftsmanship traditions, and local lifestyle. The word "Craft" originated from Old English, literally meaning 'power' or 'skill'. This word is linked to Germanic origin words like Dutch (kracht), German (Kraft), and Swedish (kraft), which also imply power or ability (Handa, 2001). The term "crafts" is used for artistic traditions traditionally associated with the creation of utilitarian and decorative objects. These generally use natural mediums such as wood, clay, textiles, metal, glass, and ceramics. Wood Craft in India is a shared and vibrant tradition, existing in some form in almost every region. A distinct branch of this tradition that has gained international recognition is Saharanpur's wood art. This historical city of Uttar Pradesh is located approximately 45-50 kilometers from Dehradun and is also famous as "Wooden City". Saharanpur's wood art is known not only in India but also abroad for its beauty and intricacy. Artisans here have been carving floral and leaf patterns, intricate lattice designs, making pillars and swings, and transforming utilitarian objects into decorative forms on woods like mango, teak, and walnut for generations (EPCH, 2023). According to history, this art tradition is linked to forests, where dense forests once existed, and where this wood craftsmanship began. According to one opinion, the name Saharanpur is also associated with a sage named "Saharuni" who settled in this area. Products made from Saharanpur wood, such as furniture, decorative items, and gift items, are not only consumed nationwide but have also become a large part of international exports. Today, this art directly and indirectly provides employment to one to two lakh families and conducts business worth ₹1300 to ₹2000 crore annually (DC Handicrafts, 2022; The Hindu, 2022).

भारतीय कला परंपरा में हस्तशिल्पों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, जो देश की सांस्कृतिक विविधता, कारीगरी की परंपरा, और स्थानीय जीवनशैली का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं। "क्राफ्ट" (Craft)) शब्द की उत्पत्ति पुरानी अंग्रेज़ी भाषा से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'शक्ति' या 'कौशल' होता है। यह शब्द डच (kracht), जर्मन (Kraft) और स्वीडिश (kraft) जैसे जर्मेनिक मूल के शब्दों से जुड़ा है, जिनका भी आशय शक्ति या क्षमता से है (Handa, 2001)। "क्राफ्ट्स" शब्द का उपयोग उन कलात्मक परंपराओं के लिए किया जाता है जो पारंपरिक रूप से उपयोगितावादी और सजावटी वस्तुओं के निर्माण से जुड़ी होती हैं। इनमें सामान्यतः लकड़ी, मिट्टी, वस्त्र, धातु, काँच और सिरेमिक जैसे प्राकृतिक माध्यमों का प्रयोग होता है। भारत में लकड़ी शिल्प (Wood Craft) एक साझा और जीवंत परंपरा है, जो लगभग हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। इसी परंपरा की एक विशिष्ट और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाली शाखा है कृ सहारनपुर की काष्ठ कला। उत्तर प्रदेश का यह ऐतिहासिक नगर देहरादून से लगभग 45-50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और 'डन सिटी' के नाम से भी प्रसिद्ध है। सहारनपुर की काष्ठ कला न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी अपनी सुंदरता और बारीकी के लिए जानी जाती है। यहाँ के कारीगर आम, सागवान और अखरोट जैसी लकड़ियों पर फूल-पत्तियों की नक्काशी, जालीदार डिज़ाइन, खंभों और झूलों का निर्माण, तथा उपयोगितावादी वस्तुओं को सजावटी रूप में ढालने का कार्य पीढ़ियों से करते आ रहे हैं (EPCH, 2023)। इतिहास के अनुसार, यह कला परंपरा जंगलों से जुड़ी है, जहाँ पहले

घने वन थे, और वहीं लकड़ी का यह कारीगरी कार्य आरंभ हुआ। एक मत के अनुसार, सहारनपुर का नाम भी "सहारूनी" नामक एक तपस्वी से जुड़ा हुआ है जो इस क्षेत्र में बसते थे। सहारनपुर के लकड़ी उत्पादों में निर्मित वस्तुएँ जैसे फर्नीचर, सजावटी वस्तुएँ और गिफ्ट आइटम न केवल देशभर में खपत होती हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय निर्यात का भी एक बड़ा हिस्सा बन चुकी हैं। आज यह कला प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से एक से दो लाख परिवारों को रोज़गार दे रही है और हर वर्ष ₹1300 से ₹2000 करोड़ तक का व्यापार करती है (DC Handicrafts, 2022; The Hindu, 2022)

Keywords: Wood Art, Handicrafts, Carving, Craft Heritage, Techniques, Handmade Products, Indian Craft Market, World-class Handicrafts.

काष्ठ कला, हस्तशिल्प, नक्काशी, शिल्पकला विरासत, तकनीकें, हस्तनिर्मित उत्पाद, भारतीय शिल्प बाजार, विश्वस्तरीय हस्तशिल्प

Received: 8/4/2025
Published: 8/31/2025
----
* Corresponding author.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सहारनपुर की काष्ठ कला की शुरुआत मुगल काल से मानी जाती है। Saharanpur District Gazetteer (1909) के अनुसार, सहारनपुर के निकटवर्ती क्षेत्र में कभी उपजाऊ खेती होती थी, जहाँ पानी की उपलब्धता अच्छी थी। नदी और बंजर भूमि को छोड़कर ऊँचाई वाले भागों में आम और अन्य फलों के बगीचे बहुतायत में थे, जो समय के साथ सहारनपुर की समृद्धि का प्रतीक बने (Harnal 36)। 1906-07 तक यह क्षेत्रफल लगभग 13,133 एकड़ हो गया था, जो जिले के कुल क्षेत्रफल का एक प्रतिशत था। सहारनपुर में कुओं की संख्या बहुत थी, लेकिन बलुई मिट्टी के कारण उनकी औसत आयु केवल चार साल होती थी। विशेष रूप से हिण्डन नदी के पूर्व में नागल और देवबंद के बीच कुएँ अपेक्षाकृत सफलतापूर्वक बनाए जाते थे, जबकि पश्चिमी क्षेत्र में फारसी पहियों का उपयोग होता था (Harnal 42-45)। माना जाता है कि जब मुग़ल भारत आए, तो वे कश्मीरी कारीगरों को अपने साथ लाए थे, जो लकड़ी पर महीन नक्काशी करने में निपुण थे (भ्दकं 28)। उन्होंने सहारनपुर में स्थानीय लकड़ी पर काम शुरू किया और धीरे-धीरे स्थानीय कारीगरों ने भी यह कला सीख ली। इस प्रक्रिया ने सहारनपुर को एक नई पहचान दी, और मुग़ल शैली की बेल-बूटे, फूल-पत्तियों की डिज़ाइन, और जालीदार कार्य प्रसिद्ध हुए (Wars)। इस काष्ठ कला में केवल इस्लामिक शैलियाँ नहीं, बल्कि हिंदू धार्मिक प्रतीकों और शैली को भी स्थान मिला, जिससे यह एक समन्वित सांस्कृतिक परंपरा बन गई (Handa 31)। स्थानीय कारीगर शकील ने बताया कि मुगल काल में इस काष्ठ कला का उपयोग राजमहलों और दरबारों की सजावट के लिए होता था (Interview with Shakil Ahmad)। ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिटिश शासन के दौरान इस कला को एक नया मार्ग मिला। अंग्रेजों ने इसे समयानुकूल तकनीकों और बाजारों से जोड़ा, जिससे यह अंतरराष्ट्रीय स्तर तक फैलने लगी (Singh 50)। यह कला आज भी समृद्ध है और इसमें स्थानीय परंपरा, सांस्कृतिक विविधता और ऐतिहासिक विरासत की गहराई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (Interview with Mohammad; Jain)।

काष्ठ कला की शिल्प प्रक्रिया (Craft Techniques & Tools)

सहारनपुर की काष्ठ कला को विशिष्ट और अद्वितीय बनाने में सबसे अहम भूमिका वहाँ के कारीगरों की कठिन मेहनत, अनुभव और पारंपरिक ज्ञान की है। इस कला में विभिन्न प्रकार की स्थानीय लकड़ियों का उपयोग किया जाता है, जिनमें श्री श्याम, सागवान, आम, टीक, अखरोट और अमरूद प्रमुख हैं। इन सबमें शीशम की लकड़ी को सबसे श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि यह नमी को अवशोषित नहीं करती, अत्यंत कठोर होती है और दीर्घकालिक टिकाऊपन प्रदान करती है (Handa 45)। किसी भी नक्काशी कार्य की शुरुआत लकड़ी के चयन से होती है, जिसे अच्छी तरह सुखाया जाता है और आकार अनुसार काटा जाता है। इसके पश्चात लकड़ी पर चॉक से डिज़ाइन की छपाई की जाती है और फिर उसे श्चिरईश् नामक प्रक्रिया द्वारा काटा जाता है। इस प्रक्रिया में लोहे से बनी छोटी-छोटी छेनियाँ और हथौड़ीनुमा लकड़ी के उपकरणों का उपयोग किया जाता है (Kumar 78)। कारीगर इन औजारों की सहायता से बेल-बूटे, फूल-पत्ती, जालीदार आकृतियाँ और कश्मीरी शैली की भारी नक्काशी करते हैं (Sharma 103) । नक्काशी के उपरांत, यदि लकड़ी पर और भी सौंदर्य जोड़ना हो, तो उसके रिक्त स्थानों में तांबे या पीतल की तार भराई जाती है या फिर हड्डी से बने सफेद नगनुमा टुकड़ों का भराव किया जाता है, जिसे 'भारी' कहा जाता है (Gupta 90)। इसके बाद पूरी सतह को बालू कागज़ (सैंड पेपर) से चिकना किया जाता है, जिसे श्सैंडिंगश् कहा जाता है, और फिर लकड़ी पर पॉलिश कर उसे चमकदार रूप प्रदान किया जाता है। यह संपूर्ण प्रक्रिया अत्यंत समयसाध्य, श्रमसाध्य और सूक्ष्मता की मांग करती है (Handa 49))। पारंपरिक औज़ार जैसे दृ चीनी, हथौड़ी, रंदा, सैंड पेपर के साथ-साथ अब आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मशीनों का भी प्रयोग होने लगा है, जिससे उत्पादों में परिष्कार और विविधता आई है। इन समस्त कारणों से सहारनपुर की काष्ठ कला न केवल भारत, बल्कि विश्व स्तर पर अपनी महीन नक्काशी, टिकाऊपन और सौंदर्यशास्त्रीय आकर्षण के लिए जानी जाती है (Kumar 81))।

कलात्मक विशेषताएँ (Artistic Features & Motifs)

अपने प्राचीनतम रूप में यह उद्योग मुख्यतः दरवाजों, चौखटों आदि की लकड़ी की नक्काशी द्वारा सजावट करता था, जिसमें मुख्य रूप से शीशम का उपयोग होता था। आधुनिक आवश्यकताओं के कारण घरेलू फर्नीचर की माँग में भारी वृद्धि हुई है, जिसका उत्पादन अब काफी मात्रा में होता है, और कई मामलों में यह अत्यंत उत्कृष्ट होता है। यह शीशम और तुरही से बनाया जाता है, जबकि छोटी वस्तुएँ दूधी नामक मुलायम सफेद लकड़ी से बनाई जाती हैं, जो शिवालिक पहाड़ियों पर प्रचुर मात्रा में उगती है (Saharanpur Gazetteer 92)। हालाँकि, असली लकड़ी की नक्काशी, रेट-आरी के आगमन से लगभग लुप्त हो गई है, और स्क्रीन, मेज़ों, फ्रेमों आदि के निर्यात व्यापार के कारण इस काम में भारी गिरावट आई है, और हज़ारों मशीन-निर्मित वस्तुएँ यूरोप और अमेरिका को निर्यात की जा रही हैं। अलंकरण मुख्यतः ज्यामितीय पैटर्न तक ही सीमित है, और आमतौर पर केवल हल्के पुष्प डिज़ाइनों की नक्काशी ही होती है (Saharanpur Gazetteer 92)। नक्काशी करने वाले अभी भी ऑर्डर पर अच्छा काम करते हैं, लेकिन उनकी संख्या कम हो गई है और मुनाफा नगण्य है। एक आधुनिक नवाचार जड़ाऊ काम है, जो हाल ही में एक यूरोपीय निवासी के प्रभाव से सहारनपुर में निर्मित हुआ। सादे शीशम पर पीतल, तांबे और गोर्मन चांदी के पुष्प डिज़ाइन बनाए जाते हैं, और यह सजावट, हालाँकि कभी-कभी तस्वीरों के फ्रेम और ताबूतों पर भी लागू होती है, पैनलों पर सबसे उपयुक्त है, इस काम के बेहतरीन नमूने सहारनपुर चर्च में पाए जाते हैं (Saharanpur Gazetteer 92)। सहारनपुर की सबसे बड़ी खास बात यह है कि वहां की जो कला है वह एक अलग ही तरह की है, जो हर नक्काशी और डिज़ाइन में एक अपना इतिहास और कहानी कहती है। यह केवल लकड़ी को काटने या सजाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें भारतीय संस्कृति, परंपरा और भावनाओं की गहरी छाप है (Handa 45)। इस कला में कई पारंपरिक डिज़ाइनों का उपयोग होता है, जैसे - प्रकृति से प्रेरित

फूल-पत्तियाँ और जालीदार आकृतियाँ जो मुगल काल की विरासत को दर्शाती हैं। अंगूर की बेल जैसी डिज़ाइनें भी यहाँ के शिल्प में दिखाई देती हैं, जो प्राचीन स्थापत्य कला की झलक प्रस्तुत करती हैं (Handa 45) । भारतीय कला की विशिष्टता इस कला में झलकती है, जो सहारनपुर के स्थानीय कारीगरों द्वारा अपनाई गई है और अन्य शैलियों के साथ मिलकर एक अनोखी पहचान बनाती है। यहाँ जाति या धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है; विभिन्न धार्मिक प्रतीक जैसे राधा-कृष्ण की रासलीला, हाथी, कमल आदि दर्शाते हैं कि यह कला भारतीय संस्कृति की गहराई से जुड़ी हुई है (Kumar 128)। कई डिज़ाइनों में 'इनले वर्क' देखने को मिलता है जिसमें हाथीदांत जैसी संरचनाएँ, पीतल, हड्डी या तांबे की पट्टियाँ जड़ी जाती हैं। इसे 'इनले बुनाई' या टिकाई कहते हैं, जो अब कश्मीरी शिल्प के रूप में जानी जाती है (Kumar 129)। सहारनपुर की काष्ठ कला केवल फर्नीचर निर्माण नहीं है, यह भारत की लोक कला, धार्मिक भावना, और संवेदनशीलता का जीवन्त उदाहरण है। हर डिज़ाइन और नक्काशी श्रृंगार, भक्ति, शांति और सौंदर्य की भावनाओं से युक्त एक कहानी कहती है। यही कारण है कि यह कला अपने विशिष्ट रंग, रूप, शैली और स्थापत्य की झलक के कारण भारतीय सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है (Handa 46) ।

सामाजिक एवं आर्थिक योगदान (Socio-Economic Impact)

सहारनपुर की काष्ठ कला न केवल एक सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि यह क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन का भी एक अभिन्न अंग है। सहारनपुर की काष्ठ कला न केवल एक सुंदर हस्तकला है, बल्कि यह हजारों परिवारों की आजीविका का भी मुख्य साधन है। यह कला सीधे और परोक्ष रूप से करीब 1 से 2 लाख परिवारों को रोज़गार देती है। इसमें कारीगर, बढ़ई, डिज़ाइनर, रंग-रोगन करने वाले, पैकिंग करने वाले और व्यापार से जुड़े लोग शामिल होते हैं (Ansari 2021)। इस कला में काम करने वाले अधिकतर लोग पारंपरिक रूप से इस पेशे से जुड़े हुए हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी इसे सीखते और अपनाते आ रहे हैं (Tripathi 2018)। खास बात यह है कि यह काम शहरी इलाकों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक फैला हुआ है, जिससे ग्रामीण विकास में भी इसका बड़ा योगदान है। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो सहारनपुर की काष्ठ कला ने भारत को अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहचान दिलाई है। यहाँ के बनाए गए फर्नीचर, सजावटी वस्तुएँ, और नक्काशीदार सामान विदेशों में बहुत पसंद किए जाते हैं (Khurana 2019)। पहले जहाँ इसका निर्यात मूल्य सालाना ₹400 से ₹500 करोड़ के बीच था, वहीं अब यह बढ़कर लगभग ₹1300 से ₹2000 करोड़ तक पहुँच गया है (Government of India, 2011। यह बढ़ोतरी इस बात का संकेत है कि सहारनपुर की कला की मांग देश के बाहर भी तेज़ी से बढ़ रही है। इस कला क्षेत्र से न केवल आर्थिक लाभ मिल रहा है, बल्कि यह सामाजिक रूप से भी लोगों को स्वरोजगार और स्थायी रोज़गार उपलब्ध करा रहा है। महिलाएँ भी अब इस क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम कर रही हैं (Upadhyay 2018)। इस प्रकार, सहारनपुर की काष्ठ कला रोज़गार, ग्रामीण विकास, और विदेशी मुद्रा अर्जन में अहम भूमिका निभा रही है, जिससे यह एक सामाजिक-आर्थिक स्तंभ के रूप में स्थापित हो चुकी है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से 'बरहाई' जाति के लोग इस कारीगरी से जुड़े हुए हैं। वर्ष 1965 के सहारनपुर गजेटियर के अनुसार, जिले में बरहाई जाति की संख्या 21,903 थी, जो विशेष रूप से गोरखपुर, बस्ती और गोंडा जिलों में अधिक पाई जाती है। यह समुदाय पूरे सहारनपुर जिले में समान रूप से फैला हुआ है, लेकिन रुड़की तहसील में इनकी सघनता अधिक है (Saharanpur Gazetteer 115)। यह आँकड़ा इस बात का संकेत देता है कि यह जाति काष्ठ शिल्प के माध्यम से व्यापक सामाजिक भागीदारी निभाती रही है। इतिहासकारों और शोधकर्ताओं का मानना है कि सहारनपुर की यह पारंपरिक काष्ठ कला मुग़ल कालीन प्रभावों के साथ विकसित हुई है, जिसमें स्थानीय कारीगरों ने मुग़ल शैली की ज्यामितीय नक्काशी को अपने परंपरागत सौंदर्यबोध के साथ समृद्ध किया (Department of Archaeology, Govt. of India 1967)। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो सहारनपुर की यह कला स्थानीय लोगों की सामूहिक स्मृति,

सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना को दर्शाती है। उपाध्याय ने अपने शोधग्रंथ हमारा सहारनपुर में लिखा है कि यह कला केवल जीविकोपार्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समुदाय विशेष के सामूहिक सौंदर्यबोध का प्रतीक भी है (Upadhyay 2018)। धार्मिक प्रभावों के संदर्भ में नदवी (1963) ने अपनी पुस्तक दारुल उलूम देवबंदर - इतिहास और योगदान में सहारनपुर की इस्लामी परंपराओं को काष्ठ शिल्प की डिज़ाइनों में व्याख्यायित किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह कला धार्मिक-सांस्कृतिक समावेशन का परिणाम है (Nadvi 1963)। खुराना (2019) ने अपने शोध Comparative Study of Wood Carving Styles in Northern India में सहारनपुर की काष्ठ कला की तुलना कश्मीर और हिमाचल प्रदेश की शैली से की है। उनके अनुसार सहारनपुर के कारीगर फल-पत्तियों और ज्यामितीय आकृतियों में अत्यधिक कुशल हैं और यह शैली विशिष्ट पहचान रखती है (Khurrana 2019) भारत सरकार की वर्ष 2011 की हस्तशिल्प कारीगर गणना रिपोर्ट के अनुसार, सहारनपुर में लगभग 5,000 परिवार सीधे या परोक्ष रूप से इस कला से जुड़े हुए हैं। यह रिपोर्ट इन कारीगरों की आय, कार्य स्थितियाँ और बाज़ार से जुड़ी समस्याओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है (Government of India, Handicrafts Census 2011)

वर्तमान संदर्भ में अंसारी (2021) ने अपने शोध सहारनपुर की काष्ठ कलारू समकालीन चुनौतियाँ एवं अवसर में यह स्पष्ट किया है कि ग्लोबलाइज़ेशन के इस दौर में इस पारंपरिक शिल्प को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ रहा हैकृएक ओर परंपरागत तकनीकों का संरक्षण, और दूसरी ओर आधुनिक डिज़ाइन और बाज़ार की माँग के अनुरूप बदलाव (Ansari 2021)) । इस प्रकार, सहारनपुर की काष्ठ कला समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने वाली एक सशक्त प्रणाली बन चुकी है। यह परंपरा केवल एक शिल्प नहीं, बल्कि स्थानीय समाज का आर्थिक आधार और सांस्कृतिक गौरव भी है।

चुनौतियाँ व संरक्षण की आवश्यकता (Challenges & Preservation)

सहारनपुर की काष्ठ कला भले ही देश और विदेशों में अपनी पहचान बना चुकी है, लेकिन आज यह कला कई मुश्किलों से गुजर रही है। कोविड-19 महामारी के समय इस काम को बहुत नुकसान हुआ। कारीगरों का काम बंद हो गया, ऑर्डर रद्द हो गए और लकड़ी से बनी चीजों की माँग भी घट गई। लॉकडाउन और रात की पाबंदियों के कारण तैयार सामान समय पर नहीं भेजा जा सका, जिससे व्यापारियों और कारीगरों को बहुत घाटा हुआ (Sharma 23)। एक और बड़ी समस्या यह है कि अच्छी लकड़ी जैसे शीशम और सागवान अब महँगी हो गई हैं और आसानी से मिलती भी नहीं। साथ ही, पर्यावरण की रक्षा के लिए सरकार ने पेड़ काटने पर कुछ नियम लगाए हैं, जिससे लकड़ी की सप्लाई और कम हो जाती है (Handa 14))। कारीगरों के पास नई मशीनों और तकनीक की कमी भी एक बड़ी परेशानी है। मशीनों के उपयोग पर कई नियम हैं, और ज्यादातर कारीगर सिर्फ पुराने औज़ारों से ही काम करते हैं। इससे काम धीमा होता है और उन्हें दूसरों से प्रतियोगिता में पीछे रहना पड़ता है। सरकारी मदद की भी कमी है। बहुत से कारीगरों को डिज़ाइन सिखाने की ट्रेनिंग, मार्केट में बेचने की सुविधा, और आर्थिक मदद नहीं मिल पाती (Thakur 45)। वे अपने हुनर से बहुत अच्छी चीजें बना सकते हैं, लेकिन संसाधनों की कमी उन्हें रोक देती है। इन सभी मुश्किलों को देखते हुए यह ज़रूरी है कि इस कला को संरक्षित (बचाया) और प्रोत्साहित (बढ़ाया) जाए। सरकार को चाहिए कि वह कारीगरों को सस्ती लकड़ी, डिज़ाइन की ट्रेनिंग, नई मशीनें और बाजार की सुविधाएँ उपलब्ध कराए। निजी संस्थाएँ और डिज़ाइन स्कूल भी इसमें मदद कर सकते हैं। अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह पुरानी और अनमोल कला धीरे-धीरे खत्म हो सकती है। इसलिए हमें मिलकर इसे बचाने और आगे बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए।

नवाचार और भविष्य की संभावनाएँ (Innovation & Design Futures)

सहारनपुर की काष्ठ कला एक परंपरागत विरासत होने के साथ-साथ नवाचार और आधुनिक डिज़ाइन के साथ जुड़कर आज एक नए रूप में उभर रही है। बदलते समय और बाज़ार की ज़रूरतों को देखते हुए अब कारीगर केवल पारंपरिक डिज़ाइन ही नहीं बना रहे, बल्कि नए डिज़ाइनों और प्रोटोटाइपिंग (नमूना निर्माण) की ओर भी ध्यान दे रहे हैं। इसका मतलब है कि पहले डिज़ाइन की एक छोटी झलक तैयार की जाती है और फिर उसकी गुणवत्ता व बाज़ार की माँग के अनुसार पूरा उत्पाद विकसित किया जाता है (Handa 45)। अब सहारनपुर में कुछ युवा डिज़ाइनर और संस्थाएँ उपभोक्ता-केन्द्रित उत्पादन पर काम कर रही हैं, यानी ग्राहक की पसंद, उपयोगिता और बजट के अनुसार उत्पाद बनाए जा रहे हैं। इससे न केवल कारीगरों को नए प्रयोग करने का मौका मिल रहा है, बल्कि बाज़ार में उनकी पकड़ भी मजबूत हो रही है (Sharma 78) \\ इसके अलावा, भारत सरकार और निजी संस्थाओं द्वारा ग्रास रूट लेवल पर डिज़ाइन विकास कार्यक्रम, एग्जीबिशन (प्रदर्शनी) और डिज़ाइन फंडिंग स्कीम्स शुरू की गई हैं (Thakur 112)। ये योजनाएँ कारीगरों को देश-विदेश में अपने उत्पादों को दिखाने और बेचने का मौका देती हैं। विदेशी प्रदर्शनियों में सहारनपुर की काष्ठ कला को जो मान्यता मिलती है, उससे न केवल उसकी माँग बढ़ती है बल्कि कारीगरों को नई प्रेरणा और रोज़गार भी मिलता है (ज़नउ Kumar 64))। वर्तमान संदर्भ में अंसारी (2021) ने अपने शोध सहारनपुर की काष्ठ कलारू समकालीन चुनौतियाँ एवं अवसर में यह स्पष्ट किया है कि ग्लोबलाइज़ेशन के इस दौर में इस पारंपरिक शिल्प को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, एक ओर परंपरागत तकनीकों का संरक्षण, और दूसरी ओर आधुनिक डिज़ाइन और बाज़ार की माँग के अनुरूप बदलाव (Ansari 2021)) । इस प्रकार, सहारनपुर की काष्ठ कला समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने वाली एक सशक्त प्रणाली बन चुकी है। यह परंपरा केवल एक शिल्प नहीं, बल्कि स्थानीय समाज का आर्थिक आधार और सांस्कृतिक गौरव भी है।

चुनौतियाँ व संरक्षण की आवश्यकता (Challenges & Preservation)

सहारनपुर की काष्ठ कला भले ही देश और विदेशों में अपनी पहचान बना चुकी है, लेकिन आज यह कला कई मुश्किलों से गुजर रही है। कोविड-19 महामारी के समय इस काम को बहुत नुकसान हुआ। कारीगरों का काम बंद हो गया, ऑर्डर रद्द हो गए और लकड़ी से बनी चीजों की माँग भी घट गई। लॉकडाउन और रात की पाबंदियों के कारण तैयार सामान समय पर नहीं भेजा जा सका, जिससे व्यापारियों और कारीगरों को बहुत घाटा हुआ (Sharma 23)। एक और बड़ी समस्या यह है कि अच्छी लकड़ी जैसे शीशम और सागवान अब महँगी हो गई हैं और आसानी से मिलती भी नहीं। साथ ही, पर्यावरण की रक्षा के लिए सरकार ने पेड़ काटने पर कुछ नियम लगाए हैं, जिससे लकड़ी की सप्लाई और कम हो जाती है (Handa 14))। कारीगरों के पास नई मशीनों और तकनीक की कमी भी एक बड़ी परेशानी है। मशीनों के उपयोग पर कई नियम हैं, और ज्यादातर कारीगर सिर्फ पुराने औज़ारों से ही काम करते हैं। इससे काम धीमा होता है और उन्हें दूसरों से प्रतियोगिता में पीछे रहना पड़ता है। सरकारी मदद की भी कमी है। बहुत से कारीगरों को डिज़ाइन सिखाने की ट्रेनिंग, मार्केट में बेचने की सुविधा, और आर्थिक मदद नहीं मिल पाती (Thakur 45)। वे अपने हुनर से बहुत अच्छी चीजें बना सकते हैं, लेकिन संसाधनों की कमी उन्हें रोक देती है। इन सभी मुश्किलों को देखते हुए यह ज़रूरी है कि इस कला को संरक्षित (बचाया) और प्रोत्साहित (बढ़ाया) जाए। सरकार को चाहिए कि वह कारीगरों को सस्ती लकड़ी, डिज़ाइन की ट्रेनिंग, नई मशीनें और बाजार की सुविधाएँ उपलब्ध कराए। निजी संस्थाएँ और डिज़ाइन स्कूल भी इसमें मदद कर सकते हैं। अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह पुरानी और अनमोल कला धीरे-धीरे खत्म हो सकती है। इसलिए हमें मिलकर इसे बचाने और आगे बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए।

नवाचार और भविष्य की संभावनाएँ (Innovation & Design Futures)

सहारनपुर की काष्ठ कला एक परंपरागत विरासत होने के साथ-साथ नवाचार और आधुनिक डिज़ाइन के साथ जुड़कर आज एक नए रूप में उभर रही है। बदलते समय और बाज़ार की ज़रूरतों को देखते हुए अब कारीगर केवल पारंपरिक डिज़ाइन ही नहीं बना रहे, बल्कि नए डिज़ाइनों और प्रोटोटाइपिंग (नमूना निर्माण) की ओर भी ध्यान दे रहे हैं। इसका मतलब है कि पहले डिज़ाइन की एक छोटी झलक तैयार की जाती है और फिर उसकी गुणवत्ता व बाज़ार की माँग के अनुसार पूरा उत्पाद विकसित किया जाता है (Handa 45)। अब सहारनपुर में कुछ युवा डिज़ाइनर और संस्थाएँ उपभोक्ता-केन्द्रित उत्पादन पर काम कर रही हैं, यानी ग्राहक की पसंद, उपयोगिता और बजट के अनुसार उत्पाद बनाए जा रहे हैं। इससे न केवल कारीगरों को नए प्रयोग करने का मौका मिल रहा है, बल्कि बाज़ार में उनकी पकड़ भी मजबूत हो रही है (Sharma 78) इसके अलावा, भारत सरकार और निजी संस्थाओं द्वारा ग्रास रूट लेवल पर डिज़ाइन विकास कार्यक्रम, एग्जीबिशन (प्रदर्शनी) और डिज़ाइन फंडिंग स्कीम्स शुरू की गई हैं (Thakur 112)। ये योजनाएँ कारीगरों को देश-विदेश में अपने उत्पादों को दिखाने और बेचने का मौका देती हैं। विदेशी प्रदर्शनियों में सहारनपुर की काष्ठ कला को जो मान्यता मिलती है, उससे न केवल उसकी माँग बढ़ती है बल्कि कारीगरों को नई प्रेरणा और रोज़गार भी मिलता है (ज्ञनउ Kumar 64))।

भविष्य में अगर सहारनपुर की काष्ठ कला को डिज़ाइन संस्थानों, तकनीकी प्रशिक्षण और सरकारी सहयोग के माध्यम से सशक्त किया जाए, तो यह क्षेत्र नवाचार, आत्मनिर्भरता, और वैश्विक पहचान की दिशा में और आगे बढ़ सकता है (Verma 98। इस विरासत को अगर सही दिशा में प्रोत्साहित किया जाए, तो यह भारतीय हस्तशिल्प की दुनिया में एक नया अध्याय लिख सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सहारनपुर की काष्ठ कला भारतीय कला और शिल्प परंपरा की एक अनूठी और अमूल्य धरोहर है। यह कला केवल लकड़ी पर नक्काशी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की संस्कृति, इतिहास, और समाज की गहराइयों से जुड़ी हुई है। मुगल काल से शुरू होकर यह परंपरा आज भी जीवित है और लगातार बदलते समय के साथ खुद को ढालती रही है। इसमें हिंदू-मुस्लिम शैली का सुंदर मेल देखने को मिलता है, जो भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। इस कला का केवल सांस्कृतिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक महत्व भी बहुत बड़ा है। लाखों लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग से जुड़े हैं, और यह भारत के हस्तशिल्प निर्यात में भी एक बड़ी भूमिका निभा रही है। सहारनपुर की यह कला भारत की अर्थव्यवस्था में भी योगदान देती है और ग्रामीण विकास का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। हालांकि आज यह कला कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जैसे कच्चे माल की कमी, सरकारी सहयोग की कमी, और आधुनिक तकनीक की पहुँच में बाधाएँ। फिर भी, यदि सरकार, डिज़ाइन संस्थान, कारीगर समुदाय और बाजार के बीच बेहतर तालमेल बनाया जाए, तो इस विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित और सशक्त रूप में पहुँचाया जा सकता है। अंततः कहा जा सकता है कि सहारनपुर की काष्ठ कला न केवल एक शिल्प है, बल्कि यह भारत की संस्कृ ति, आत्मनिर्भरता और रचनात्मकता का जीवंत प्रतीक है। इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि यह गौरवशाली परंपरा भविष्य में और भी ऊँचाइयों तक पहुँच सके।

ग्रंथ सूची (References)

1. Sharma, Ritu. Indian Handicrafts: Traditional and Contemporary. Aryan Books International, 2010, pp. 22-35.
2. Thakur, Gaurav. Art and Culture of Ancient India. Diamond Publications, 2015, pp. 88-94.

3. Jain, Jyotindra. India's Craft Tradition. Mapin Publishing, 1999, pp. 40-47.
4. Chandra, Pramod. Indian Art. Thames & Hudson, 1994, pp. 102-110.
5. Gupta, S. P. Cultural Heritage of India. Agam Kala Prakashan, 2008, pp. 155-163.
6. Mukherjee, B. N. Traditional Arts of India. Abhinav Publications, 2003, pp. 64-71.
7. Banerjee, Utpal. Handicrafts of India. Niyogi Books, 2012, pp. 51-59.
8. Tiwari, Shailendra. Folk and Tribal Arts of India. National Book Trust, 2011, pp. 89-96.
9. Singh, Madhu. Indian Decorative Arts. Roli Books, 2007, pp. 77-83. \
10. Kumar, Raj. Encyclopaedia of Indian Handicrafts. Anmol Publications, 2005, pp. 133-140.
11. Mehta, Ramesh. Wood Art of India. Wisdom Tree, 2016, pp. 45-53.
12. Kapur, Anjali. Indian Crafts: A Heritage to Keep. Publication Division, 2004, pp. 27-34.
13. Sharma, Rakesh. Saharanpur: The Craft City. Saharanpur Handicraft Association, 2018, pp. 11-19.
14. Khan, Abdul. Sheesham Woodcraft of Saharanpur. Craft Council of India, 2015, pp. 58-65.
15. Joshi, Ashok. Artisans of India. Oxford University Press, 2013, pp. 144–152.
16. Yadav, Neeraj. Cultural Crafts of Uttar Pradesh. Bharat Prakashan, 2020, pp. 95-102.
17. Desai, Vishakha N. Art of India: Traditions of Indian Sculpture, Painting and Handicrafts. Asia Society, 2001, pp. 112–119.
18. Sharma, Veena. Indian Woodwork: History and Techniques. Indira Gandhi National Centre for the Arts, 2014, pp. 33-41.
19. Pathak, Rajesh. Preserving Indian Handicrafts in the Modern Era. Kalpaz Publications, 2021, pp. 205-212.
20. "Wood Carving of Saharanpur: An Art Struggling to Survive amid Lack of Support." Gaon Connection, 2021, https://www.gaonconnection.com/gaon-connection-tvvideos/wood-carving-of- saharanpur-up-craft-44591. Accessed 6 Aug. 2025.
21. "सहारनपुर की लकड़ी की नक्काशी को फिर से पहचान दिलाने की ज़रूरत." Navbharat Times, https://navbharattimes.indiatimes.com/. Accessed 6 Aug. 2025.
22. "देश-विदेश में मशहूर है सहारनपुर की काष्ठ कला, जानिए इतिहास और हालात." Jansatta, https://www.jansatta.com/. Accessed 6 Aug. 2025.
23. Khan, Mohd. "A Study on Old Havelis: Lost Heritage of Saharanpur." ResearchGate, July 2017, https://www.researchgate.net/publication/318783049. Accessed 6 Aug. 2025.
24. "Wood Carving – Saharanpur, Uttar Pradesh." D'source India – Design Resource, https://dsource.in/resource/wood-carving-saharanpur. Accessed 6 Aug. 2025.
25. "Crafts Sector Export Trends and Potentials from India." India Exim Bank, https://www.eximbankindia.in. Accessed 6 Aug. 2025.
26. "Profiles and Interviews of Saharanpur Artisans." Haath Ka Bana, https://www.haathkabana.com/. Accessed 6 Aug. 2025.
27. Pandey, Ramesh Chandra. Folk and Tribal Arts of India. Abhinav Publications, 2010. • UNESCO. World Heritage Crafts. UNESCO Publishing, 2012